International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

निर्वनीकरण आज के युग की एक वैश्विक समस्या और पेड़ की पुकार कविता से जनजागृती

डॉ. गीता परमार

सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, कर्मवीर शांतारामबापू वावरे महाविद्यालय, सिडको, नाशिक.

Corresponding Author - डॉ. गीता परमार

DOI - 10.5281/zenodo.10872981

सारांश:

निर्वनीकरण याने वनों की कटाई आज के युग में एक वैश्विक समस्या बन गयी है और इस से जैव विविधता में हानी, जल गुणवत्ता में कमी, मरुस्थलीकरण, मिट्टी की उपजाउता में कमी, फसल की पैदावार में कमी, बाढ़ का खतरा और वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि आदि घातक परिणाम होते है। पेड की पुकार' कविता के माध्यम से कवि शंभुनाथ सिंह ने पेड़ की व्यथा व्यक्त की है। वे इस कविता के माध्यम से यह कहते हैं कि आज मनुष्य अपने स्वार्थ में अंधा होकर वृक्षों को नष्ट करने में निरन्तर लगा हुआ है। पेड़ अपना दुख व्यक्त करना चाहते हैं। कवि ने अपनी इसी पीड़ा को कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। इस कविता का मुख्य उद्देश्य लोगों को इस संबंध में जागरूक करना है कि हमें वृक्षों को नहीं काटना चाहिए बल्कि उनका संरक्षण करना चाहिए। हमें अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक होना चाहिए और पेड़ों को काटने से बचाना चाहिए क्योंकि वे हमारे पर्यावरण का आधार हैं। इसप्रकार कवी ने निर्वनीकरण जो आज के युग की एक वैश्विक समस्या बन गया है जीस के फलस्वरूप सम्पूर्ण मानवजाति के अस्तित्व को खतरा बन गया है। कवी ने इस संकट से बचने के लिए हमें पर्यावरण संवर्धन करना चाहिये यह संदेश दिया है।

Keywords: ***निर्वनीकरण, वनोन्मूलन, वनों की कटाई, वैश्विक समस्या, पर्यावरण संवर्धन, ग्लोबल वार्मिंग, मिट्टी का क्षरण, प्रकाश संश्लेषण, वायु के फ़िल्टर, नवगीत, प्रगतीशील कवी आदि।***

आमुख:

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य निर्वनीकरण याने वनों की कटाई किस प्रकार आज एक वैश्विक समस्या बन गयी है इसको समझना है और कवी नवगीत के एक प्रमुख प्रणेता शंभुनाथ सिंह ने पेड़ की पुकार कविता के माध्यम से किस प्रकार पर्यावरण सुरक्षा और संवर्धन की जनजागृती करने का प्रयास किया है इस पर प्रकाश डालना है।

उद्देश:

- निर्वनीकरण किस प्रकार आज एक वैश्विक समस्या बन गयी है उसे समजना।

- *पेड़ की पुकार* कविता में कवी शंभुनाथ सिंह ने पेड़ की व्यथा किस प्रकार व्यक्त की है और हमें पेड़ों को तोड़ना नहीं बल्कि पेड़ को बचाना होगा यह पर्यावरण सुरक्षा और संवर्धन करने का संदेश किस तरह प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है इसका संशोधन करना।

निर्वनीकरण आज के युग की आज एक वैश्विक समस्या:

आज मानव ने प्रगति के नाम पर बड़ी बड़ी इमारते बनाने के लिए बड़े स्तर पर पेड़ की कटाई शुरू की है, इससे वन नष्ट हो रहे है और कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए गए है। आज निर्वनीकरण याने वनों की कटाई से वायुमंडलीय क्रम बदल रहे है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देने वाले नकारात्मक प्रतिक्रिया चक्र बढ़ रहे हैं। इससे वनों की कटाई वाले क्षेत्रों में पर्यावरणीय प्रभाव पड़ते हैं जैसे मिट्टी का क्षरण और बंजर भूमि में वृद्धि। पेड़ों को काटने से कई नुकसान होते हैं। निर्वनीकरण जल चक्र को गंभीरता से प्रभावित करता है। यह वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर देता है। इससे कार्बन डाइऑक्साइड में वृद्धि होती है जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बढ़ती है। पेड़ों को काटने से जानवरों और पक्षियों के आवास नष्ट हो जाते हैं। पर्यावरण का संतुलन बिघड़कर बाढ़ आ सकती है या जंगल में आग लग सकती है। इससे लकड़ी या इमारती लकड़ी की आपूर्ति सीमित हो जाती है।

पर्यावरण में पेड़ों का बड़ा महत्व है। स्वच्छ वायु के लिए पेड़ों के वन बहुत आवश्यक हैं। प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से पेड़ों की पत्तियाँ कार्बन डाइऑक्साइड और पानी लेती हैं। सूर्य की ऊर्जा के साथ मिलकर वे इन सामग्रियों को पोषक तत्वों में परिवर्तित करते हैं। इस प्रक्रिया का एक उत्पाद ऑक्सीजन है। एक बड़ा पेड़ चार लोगों के लिए एक दिन की ऑक्सीजन आपूर्ति जितना उत्पादन कर सकता है। पेड़ जल और वायु प्रदूषण के प्रभाव को भी कम करते हैं जिनमें विभिन्न रसायनों के कण होते हैं और जो फेफड़ों और हृदय रोग का कारण बन सकते हैं। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को संग्रहित करते हैं और इसे वायुमंडल से बाहर रखते हैं। पेड़ों से भरे वन अनिवार्य रूप से बड़े वायु फिल्टर हैं। निर्वनीकरण याने वनों की कटाई का पर्यावरण में विपरीत प्रभाव पड़ता है। यह स्वच्छ हवा के एक आवश्यक स्रोत को हटा देता है और संग्रहीत कार्बन को छोड़ देता है जिससे हवा की गुणवत्ता खराब होती है और ख़राब हवा के मानव जीवन पर गंभीर परिणाम होते हैं।

पेड़ की पुकार कविता में पर्यावरण सुरक्षा और संवर्धन संदेश :

पेड़ की पुकार कविता का शिर्षक बहुत समर्पक है। इसका अर्थ है पेड रो रो कर पुकार रहा है कि मुझे मत काटो। कविता की प्रथम चार पंक्तियों में पुरी कविता का सार साम्मलित है-

" रो रोकर पुकार रहा हूँ
हमें जमीं से मत उखाडो ,

रक्तस्त्राव से भीग गया हूँ मैं

कुल्हाडी अब मत मारो"

इन पंक्तियो में यह स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि पेड़ों को बड़ी निर्दयता से काटा जा रहा है । इससे वनों की संख्या दिन ब दिन कम हो रही है । यहाँ पर पेडों को मानवीककरण के माध्यम से मानव की उपमा देकर यह बताया गया है कि पेड़ रो रोकर पुकार रहा है, उसे रक्तस्त्राव हो रहा है । वह बिनती कर रहा है कि उसे जमीन से मत उखाडो और उसे कुल्हाडी मत मारो । इन पंक्तियों में यह कल्पना की गई है कि पेड़ पाठकों से बात कर रहा है और अपनी करुण कहानी; अपनी व्यथा पाठकों को बता रहा है।

अगले चरण में पाठकों को यह बताया गया है कि आसमान के बादल ने पेड़ को अच्छे से पाला है । हर मौसम में पेड़ को सींचा है और मिट्टी- करकट झाडा है । यह प्रतीत होता है कि कविता कि भाषा सरल है और संभाषण शैली में कविता को प्रस्तुत किया गया है । पेड बा बताता है-

"उन मंद हवाओं से पूछो,

जो झूला हमें झुलाया है"

जिस प्रकार माँ अपने बच्चों को झूला झूलाती है, उसका खयाल रखती उसी तरह मंद हवाओं ने पेड़ को झूला झुलाया है और उसका पल-पल खयाल रखा है और इसका परिणाम ही है कि पेड को अंकुर उगकर आया है । पेड रो-रोकर यह पुकार रहा है उसे जमीं से मत उखाडो इसके बजाय सुखे उपवन में पेड़ों का एक बाग लगा लो ।

पेड अपने आप को इस धरा की सुंदर छाया बताता है । इन पेड़ों के कारण ही मधुर मधुर मंद हवाएँ बनायी गयी है । हवाओं का अस्तीत्व इन पेडों से है । इन पेड़ों की वजह से हवाएँ अमृत बन कर चल रही है । इस धरा में जो कुछ भी है वह पेड की वजह से है । पेड़ कहता है - *" हमीं से नाता है जीवों का जो धरा पर आएंगे"*

इस धरा में हर जीव के अस्तीत्व का कारण पेड़ है । पेड नहीं है तो कुछ भी नहीं है और जो भी मृत्यु के बाद इस दुनिया से जाएगा उस सभी का रिश्ता भी इस पेड से है । *"हम से रिश्ता है जन-जन का जो इस धरा से जाएँगे"*

तुफान के आने से इन पेड़ों की शाखाएँ पहले से टूटीं है और पेड बिनती कर रहा है कि और एक बार काटकर ठूंठ आँख से मत डालो । *"रो रोकर पुकार रहा हूँ, हमें जमीं से मत उखाडो"* इन दो पक्तीयों को पुनः बार बार लिखा गया है इसका अर्थ है की कवी इस बात को बहुत महत्व दे रहे है ।

मनुष्य और प्राणी जो अमृत का रसपान करते है वह पेड की वजह से ही संभव है । पेड़ कि वजह से बहुत सारी औषधि बनती है जिससे नई शाखाओं में जान आती है । पेड़ हमें फल-फूल देते है फिर मी मनुष्य पेड़ को काटता है । जैसे वह इससे अनजान है । पेड़ की वजह से मनुष्य को जीवन मिलता है । अगर इस विश्व में पेड नहीं होंगे तो *"मनुष्य का जीना दूभर हो जाएगा । इस सृष्टी में त्राहि त्राहि जन जन होगी"* और चारों दिशाओं में हाहाकार मच जाएगा ।

इस प्रकार पेड बार बार रो रो कर यह बीनती कर रहा है कि *"हमें जमीन से मत उखाडो"* अगर पेड़ों को इसप्रकार से काटा गया और पूरे विश्व

की जमीन पर निरवनीकरण हो जाएगा जीससे पुरी मानवजाति पछताएगी। मनुष्य जब घर बनाता है तो लकडीयों का उपयोग करता यह लकडीयाँ हमें पडों से मिलती है। इसप्रकार मनुष्य के घर का अस्तीत्व भी पेड़ों से है - *" हमीं से घर-घर सब मिलता है जो खडा हुआ किवाड़ा है।"*

कविता की अंतीम चार पंक्तीयों में पेड पाठकों को सलाह देता है-*"गली गली में पेड़ लगाओ हर प्राणी में आस जगा दो।"* इसप्रकार पेड हमें वृक्षारोपण करने का याने हर गली में पेड लगाने का सुजाव देता है। इससे मनुष्य और अन्य सभी प्राणीओं मे जीने की आस जाग जाएगी।

जिस पंक्तियों से कविता कि शुरुवात की गयी है उन्हीं से कविता का अंत होता है, *"रो रोकर पुकार रहा हूँ हमें जमीं से मत उखाडो"* इसप्रकार कवीत में एक पेड ने उसकी व्यथा को शब्दों के माध्यम बताया है लेकिन साथ ही पेड़ का सृष्टी में क्या महत्व है वह सोदाहरण समझाया है। कवी शंभुनाथ सिंह पर मानो पेडों को बचाने कि जिम्मेदारी है और वे अपनी जिम्मेदारी बडी अच्छी तरह कविता के माध्यम से निभा रहे है।

तात्पर्य :

अंत में यह कहा जा सकता है की यकीनन कवी शंभुनाथ सिंह नवगीत के एक प्रमुख प्रणेता है और साथ ही वह प्रगतीशील कवी है जो अपनी कविता को समाज सुधार के उद्देश में प्रस्तुत करते है। आपकी कविता पाठकों को वृक्ष संरवर्धन की नई बौद्धिक चेतना देती है। कवी शंभुनाथ सिंह की यह विशेषता है, को *वह 'मानवजीवन को आधुनिक विसंगतियों का प्रभावशाली चित्र अंकित करने में अद्वितीय है'*। कवी शंभुनाथ सिंह नवगीत के एक प्रमुख प्रणेता है। नवगीत को हिन्दी साहित्य की प्रमुख लोकप्रिय विधा के रुप में स्थापित करने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिक कवी विलीयम वर्डसवर्थ ने जीस प्रकार पर्यावरण और मानवजीवन को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है और हमेशा पर्यावरण को बचाने और उसका संवर्धन करने का संदेश दिया है उसी प्रकार कवी शंभुनाथ सिंह ने अपने नवगीतों के माध्यम से पर्यावरण के संवर्धन का संदेश दिया है।

सन्दर्भ-सूची:

1. साहित्य सौरभहिन्दी :सम्पादन ,2019 , सवित्रीबाई फुले पुणे विश्व ,अध्ययन मंडल मुंबई ,परिदृश्य प्रकाशन ,पुणे ,विद्यालय
2. पेड़ पौधों की आश्चर्यजनक बातेंकुमार , नई दिल्ली ,प्रभात प्रकाशन ,2018 ,मनीष
3. भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधों का विशेष महत्व 5 दैनिक जागरण बुधवार ,वधवा .डॉ , 2020 अगस्त
4. **www.Wikipedia.com**
5. **https://www.youtube.com/watch?v=j2RZ9V7SGcs**
6. https://www.humanrightscareers.com/issues/negative-effects-of-deforestation/